ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 273-277**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

महिला सशक्तिकरण में तकनीक की भूमिका : एक समाज–ऐतिहासिक अध्ययन

राजेश्वर कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला महाविद्यालय, बलिया (उ०प्र०)

Received-16.12.2024, Revised-25.12.2024, Accepted-29.12.2024 E-mail : rajeshwarraj.1980@gmail.com

सारांशः समाज के तकनीकी विकास का स्तर संबंधित समाज की दशा और दिशा निर्धारित करने की क्षमता रखता है। तकनीकी विकास तथा उससे संबंधित कारकों ने समाज के सभी पक्षों को प्रभावित करने के साथ–साथ समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को भी प्रभावित किया है। इस शोध पत्र में समाज के तकनीकी विकास का स्तर एवं इसका महिलाओं के सामाजिक– सांस्कृतिक प्रस्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही समाज के तकनीकी स्तर में होने वाले उन्नयन के परिणामस्वरूप महिलाओं के समक्ष उत्पन्न होने वाले अवसरों एवं चुनौतियों की भी चर्चा की गई है। यह अध्ययन बताता है कि तकनीक वह महत्वपूर्ण कारक रहा है, जिसके इर्द–गिर्द तथा उस पर आधारित रहते हुए समाज अपने प्रारंभिक व आदिम स्तर से निरंतर उन्नति करते हुए आधुनिक व उत्तर आधुनिकता के स्तर को प्राप्त कर सका है। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में समाज के तकनीकी विकास का स्तर एवं महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के बीच का संबंध जटिल परिलक्षित होता है।

कुंजीभूत शब्द– महिला सशक्तिकरण, तकनीकी विकास, सामाजिक प्रस्थिति, सामाजिक–सांस्कृतिक प्रस्थिति, कालखंड, आदिम स्तर ।

परिचय – मानव समाज एवं सभ्यता के विकासक्रम में तकनीकी विकास की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।आग की खोज, पत्थर के औजारों का निर्माण एवं पहिये के अविष्कार आदि से प्रारंभ हुआ यह सफर तकनीकी विकास, औद्योगीकरण, कंम्पयूटर व इंटरनेट एवं रोबोटिक्स व आर्टिफीसियल इंटेलीजेंस तक पहुंचा। प्रौद्योगिकी का इतिहास वस्तुतः उपयोगी वस्तुओं के निर्माण करने में प्रयुक्त उपकरणों एवं तकनीकों के खोज का इतिहास है। प्रौद्योगिकी ने वैज्ञानिक शोधों (विशेषकर आधुनिक युग में) के लिये मार्ग बनाया है तो वैज्ञानिक जानकारियों ने नयी प्रौद्योगिकी के विकास का रास्ता साफ किया है। आधुनिक काल से संबंधित समाज का तकनीकी विकास और महिला सशक्तिकरण विषय पर पूर्व में कई अध्ययन हुए हैं, जिनमें कुछ निम्नवत हैं :

Lechman, Ewa (2021) ने तकनीक और महिला सशक्तिकरण विषयक अपने अध्ययन में व्याख्यायित किया है कि नई सूचना और संचार प्रौद्योगिकी महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को कैसे प्रभावित करती हैं तथा आईसीटी, उनके कार्यान्वयन के माध्यम से 'सशक्तीकरण प्रौद्योगिकी' कैसे बन सकती हैं। आईसीटी पर सैद्धांतिक और अनुभवजन्य साक्ष्य के माध्यम से आर्थिक विकास और वृद्धि, सामाजिक विकास, व्यापक रूप से परिभाषित सामाजिक–आर्थिक प्रगति के संदर्भ में प्रौद्योगिकी प्रगति की भूमिका के मुद्दों को रेखांकित करती है।

अरविंद कुमार शर्मा (2016) ने बताया है कि भारत में यदि समाजार्थिक विकास को और गति देनी है तो महिला सशक्तिकरण को और मजबूत करना होगा। इसमें डिजिटल साक्षरता की अहम् भूमिका है। डिजिटल रूप से साक्षर महिला ही इलेक्ट्रानिक संसाधनों का दोहन कर सकती है।

सुशीला सिंह (2023) ने कहा है कि इंटरनेट के युग में डीपफ़ेक तकनीक के शिकार होने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। इस तकनीक के ग़लत इस्तेमाल से जहां आम लोग प्रभावित हो रहे हैं, वहीं हाल के दिनों में सेलिब्रिटीज़ के भी कई डीपफ़ेक वीडियो वायरल हुए हैं। इस पर लगाम लगाने के लिए कड़े क़ानून बनाए जाने की ज़रुरत है, नहीं तो भविष्य में इसके घातक परिणाम हो सकते हैं।

आग एवं पहिये रुपी प्रारंभिक तकनीकी विकास का जब समाज में समावेशन हो रहा था, उस अवस्था में मानव समाज स्वयं में ही अपने प्रारंभिक स्थापना के दौर से गुजर रहा था। इस प्रारंभिक अवस्था में स्त्री और पुरुष दोनों सामाजिक प्रस्थिति के स्तर पर समान हुआ करते थे। सामाजिक प्रस्थिति के स्तर पर यह समानता वैदिक काल तक परिलक्षित होता है।

उत्तर वैदिक काल में इस सामाजिक व्यवस्था के असंतुलित होने के प्रारंभिक दृष्टांत प्राप्त होते हैं। समाज का तकनीकी विकास कृषि, धातु विज्ञान और शिल्प कौशल में प्रगति के साथ–साथ हुआ। उत्तर वैदिक काल में लोहे का बड़े पैमाने पर उपयोग शुरू होने से यह परिवर्तन जंगलों को साफ करने, कृषि उत्पादन और बस्तियों के विस्तार में प्रभावकारी था। लोहे के उपयोग से घूमंतू कृषि कार्य समाप्त होने की ओर अग्रसर हुआ तथा कृषि कार्य में स्थायित्व आया। इस स्थायित्व ने मानव समाज को स्थायी रूप से बसने एवं व्यवस्थित सामाजिक संरचना के निर्माण की ओर अग्रसर किया। इस समय परिवार, विवाह, गोत्र, कबीला आदि आकार ग्रहण करने लगे। घूमंतू जीवन के सापेक्ष मानव समाज का परिवार, विवाह एवं प्रारंभिक सामाजिक संरचना निर्माण की ओर अग्रसर होना निश्चित रुप से महिलाओं की सुरक्षा के लिए हितकर रहा। साथ ही, महिलाओं की दुनिया घर एवं परिवार तक सीमित रहने की शुरुआत हुई। लोहे के औजारों और हथियारों का उपयोग का प्रचलन बढ़ा। शिल्प विशिष्ट व्यवसाय का विकास हुआ, जैसे कि धातुकर्म, मिट्टी के बर्तन बनाना और बढ़ईगीरी आदि। इन शिल्पों के विकास ने व्यापार को बढ़ावा दिया और शहरी केंद्रों के उदय में योगदान दिया। कस्बों और बाजार केंद्रों का उदय होने से शहरीकरण के प्रारंभिक चरण शुरू हुए। वस्तुओं का आदान–प्रदान समुदाय या पड़ोसी जनजातियों के बीच होता था। व्यापार और आर्थिक एकीकरण में वृद्धि हुई। इस काल में, यज्ञ का महत्व बढ़ गया, जिससे

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

अनुष्ठानों और समारोहों में भी प्रगति हुई। अश्वमेध यज्ञ एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान था, जिसमें एक पवित्र घोड़े को राज्यों में घूमने के लिए स्वतंत्र किया जाता था। इन तकनीकी विकासों ने उत्तर वैदिक काल के समाज और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव लाए, जिससे कृषि उत्पादन, शहरीकरण और व्यापार में वृद्धि हुई।

उत्तर वैदिक काल से आगे महाजनपद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, मध्य काल, आधुनिक काल एवं उत्तर आधुनिक अवस्था के विभिन्न स्तरों पर बड़े पैमाने के तकनीकी अविष्कारों एवं विकास ने समाज को क्रान्तिकारी रूप से प्रभावित करने का कार्य किया।

महाजनपद काल में तकनीकी विकास का स्तर, विशेष रूप से लोहे के उपयोग के कारण महत्वपूर्ण था। इस काल में लोहे के औजारों और हथियारों का व्यापक उपयोग हुआ, जिससे कृषि और युद्ध दोनों क्षेत्रों में प्रगति हुई। इसके अतिरिक्त, शहरीकरण और व्यापार में भी वृद्धि हुई, जिससे सामाजिक और आर्थिक जीवन में बदलाव आया। काशी (वाराणसी), वैशाली, कौशाम्बी और उज्जैन जैसे प्रमुख नगरों का विकास हुआ। भरूच, ताम्रलिप्ति, सोपारा जैसे बंदरगाहों से बर्मा, सीलोन, मलाया, बेबीलोनिया और अन्य देशों के साथ समुद्री व्यापार होता था। मुख्य व्यापारिक वस्तुओं में रेशम, सोना और कढ़ाई वाले कपड़े शामिल थे। कार्षापण (तांबे और चांदी के सिक्के) विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोग किए जाते थे। लोहार, कुम्हार, बढ़ई और कपड़ा–बुनाई आधारित विभिन्न प्रकार के उद्योग–धंधों का विकास हुआ। घर के भीतर पितृसत्तात्मक नियंत्रण के मजबूत होने से महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं को निम्न स्तर पर दर्शाया गया है और उनकी भूमिकाओं को सीमित किया गया है। पुत्र को वंश चलाने के लिए महत्वपूर्ण माना जाने लगा, जिसके कारण पुत्रियों की तुलना में पुत्रों को अधिक प्राथमिकता दी जाने लगी। हालांकि बज्जि गणराज्य में महिलाओं को व्यापार, सामूहिक निर्णय प्रक्रिया और अन्य सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की स्वतंत्रता थी। बौद्ध धर्म में महिलाओं को भिक्षुणी बनने और संघ में शामिल होने की अनुमति दी गई थी, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ (झां 2004)।

मौर्य काल में तकनीकी विकास का स्तर उन्नत रहा, खासकर धातु विज्ञान, कृषि, सिंचाई, परिवहन और सिक्का प्रणाली में। लोहे के उपकरणों का व्यापक उपयोग, विशेष रूप से कृषि में, उत्पादन बढ़ाने और आर्थिक रूप से साम्राज्य को मजबूत करने में महत्वपूर्ण था। मौर्य काल में हुई तकनीकी प्रगति ने न केवल साम्राज्य की आर्थिक और सामाजिक संरचना को मजबूत किया, बल्कि कला, वास्तुकला और शहरीकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया (Harshit and Singh, 2018)। अशोक के स्तंभों, स्तूपों और गुफाओं का निर्माण मौर्य काल की कलात्मक और तकनीकी प्रगति का प्रमाण है। मौर्य काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ था, लेकिन फिर भी कुछ सामाजिक असमानताएं मौजूद थीं। साहित्यकारों के अनुसार, यह एक ऐसा समाज था जहाँ महिलाओं को आदर और सम्मान दिया जाता था। महिलाओं को पुनर्विवाह और नियोग की अनुमति थी, जो उस समय के समाज में एक महत्वपूर्ण बदलाव था। इस काल में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार भी प्राप्त था, लेकिन यह सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं था। हालांकि मौर्य काल में ही दहेज प्रथा का भी प्रचलन शुरू हुआ था। इस काल में स्त्रियां घरों में रहा करती थीं। मौर्य काल के बाद भारत में कई आक्रांता आए। इस दौरान महिलाओं की स्थिति पर काफी असर पड़ा।

गुप्त काल को भारत के इतिहास में "स्वर्ण युग" माना जाता है और इस दौरान हुए वैज्ञानिक और तकनीकी विकास ने इस काल को एक महत्वपूर्ण युग बना दिया (Saran and Singh,1994)। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे गणितज्ञों ने शून्य की अवधारणा और दशमलव प्रणाली की खोज की, जिससे गणित के क्षेत्र में क्रांति आ गई। चरक और सुश्रुत जैसे चिकित्सकों ने चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसी प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं। दिल्ली का लौह स्तम्भ गुप्त काल के धातु विज्ञान की उत्कृष्टता का प्रमाण है, जिसमें परिष्कृत धातुकर्म तकनीकों का उपयोग किया गया है। गुप्त काल में महिलाओं की स्थिति, सामाजिक मानदंडों और धार्मिक विचारों से प्रभावित थी, जिसमें शिक्षा, विवाह और संपत्ति के अधिकार जैसे पहलू शामिल थे। हालाँकि, कुछ महिलाओं ने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं, लेकिन सामान्य तौर पर, महिलाओं की स्थिति में गिरावट देखी गई और वे पुरुषों पर अधिक निर्भर हो गईं।

मध्य काल में तकनीकी विकास के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रगति हुई जिनमें बारूद का उपयोग, ऊर्ध्वाधर पवन चक्की, चश्मा, यांत्रिक घड़ियां और उन्नत जल आधारित तकनीक शामिल हैं (Habib, 2016)। इसके अलावा, निर्माण तकनीकों में भी सुधार हुआ, जैसे कि वास्तुकला की गोथिक शैली और मध्ययुगीन महल तथा कृषि में भी तीन खेत प्रणाली फसल चक्र जैसी प्रगति हुई। इस काल में विकसित विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के कई महत्वपूर्ण विकासों में से कुछ आज भी प्रचलन में हैं। मध्य काल में महिलाओं की स्थिति, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक कारकों के आधार पर भिन्न–भिन्न थी। सामान्य तौर पर, महिलाओं को पितृसत्तात्मक मानदंडों के अधीन माना जाता था, जिससे उनकी भूमिकाएँ घरेलू दायरे तक सीमित थीं और उनकी स्वायत्तता भी कम थी। हालांकि, कुछ महिलाएं, विशेष रूप से उच्च वर्गों में, शिक्षा और सामाजिक प्रभाव प्राप्त करने में सक्षम थीं। महिलाओं को अक्सर पुरुषों की तुलना में कमतर माना जाता था और वे पुरूषों के समान काम करने के योग्य नहीं मानी जाती थीं। धार्मिक और सांस्कृतिक कारक, जैसे कि पर्दा प्रथा ने महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा और विधवाओं की दुर्दशा जैसी कुप्रथाओं ने

महिलाओं के जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इस काल में भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश की और समानता की वकालत की।

यूरोप के पुनर्जागरण का अन्तिम काल से प्रारंभ हुई वैज्ञानिक क्रांति के दौरान भौतिकी, खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान, मानव शरीर रचनाशास्त्र, रसायन विज्ञान एवं अन्य विज्ञानों की प्रगति ने पुराने सिद्धन्तों को अस्वीकार कर आधुनिक विज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त किया (वर्मा, 2008)। इस प्रकार आधुनिक काल में समाज का तकनीकी विकास अभूतपूर्व रहा है। इस अभूतपूर्व तकनीकी विकास ने मानव जीवन से संबंधित – संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन व मनोरंजन आदि प्रत्येक पहलू को बदल कर रख दिया है। मानव समाज के इतिहास में औद्योगिक क्रान्ति की प्रघटना के आगमन ने संपूर्ण सामाजिक बुनावट को व्यापक रूप से प्रभावित किया। इसने महिलाओं को घर से बाहर काम करने के अवसर एवं सामाजिक परिवर्तन में भूमिका निर्वहन करने के मौके प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने में मदद की। महिलाओं को काम करने से सामाजिक मानदंडों में बदलाव आया और वे समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगीं। उनको शिक्षा और नए कौशल हासिल करने के अवसर मिले, जिससे उनकी नौकरी की संभावनाएँ बेहतर हुईं। कुछ महिलाओं ने श्रम अधिकार, महिलाओं के मताधिकार और बाल श्रम कानून जैसे मुद्दों को उठाकर सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूसरी तरफ, इस अवधि में महिलाओं को कम वेतन, लंबे काम के घंटे और खराब एवं कठिन परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ा, जिसके कारण उनको शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था। काम करने के कारण महिलाओं को बच्चों और घर की देखभाल करने में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। तकनीकी विकास के साथ–साथ सामाजिक और नैतिक चुनौतियां भी सामने आई हैं। आधुनिक तकनीकी विकास ने शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है, जिसने महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु उपयुक्त मंच तैयार किया है लेकिन इसके साथ ही कुछ चुनौतियां भी पेश की हैं। महिलाओं को इन चुनौतियों का सामना करने और तकनीकी प्रगति के लाभों का पूरी तरह से लाभ उठाने के लिए सशक्त बनाने की आवश्यकता है। उदाहरण स्वरूपः रेडियो के अविष्कार ने महिलाओं को सूचना, शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करने का कार्य किया तथा उन्हें सशक्त बनाने में भी मददगार रहा है। उनको सूचना, स्वास्थ्य, शिक्षा, कानूनी अधिकार और सरकारी योजनाओं जैसे विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए उन्हें जागरूक होने और अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद किया है। सामुदायिक रेडियो स्टेशन महिलाओं को घरेलू हिंसा, शिक्षा और मासिक धर्म जैसे मुद्दों पर बात करने के लिए एक मंच प्रदान करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं जिससे वे अपनी समस्याओं पर खुलकर चर्चा कर सकी हैं। रेडियो ने महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने और सार्वजनिक संवाद में भाग लेने के लिए भी सशक्त बनाने का कार्य किया तथा उनको अपनी राय व्यक्त करने और अपने अधिकारों के लिए आगे आने के लिए प्रेरित करने का कार्य किया है। आज भी कई रेडियो स्टेशन महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण से संबंधित विषयों पर केंद्रित कार्यक्रम प्रसारित करते हैं (एस.एम. सहगल फाउंडेशन की रिपोर्ट, 2023)।

संगीत, नाटक और अन्य विभिन्न मनोरंजनपरक कार्यक्रम के द्वारा यह समाज की आधी आबादी को तनाव कम करने और खुश रहने में मदद करता है। साथ ही, रेडियो कुछ मामलों में महिलाओं के खिलाफ रूढ़िवादिता और भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है। यह महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं में चित्रित कर सकता है और उनकी क्षमताओं को कमतर आंक सकता है। रेडियो गलत या भ्रामक जानकारी फैला सकता है, जो महिलाओं के लिए हानिकारक हो सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि उनको विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी मिले। रेडियो महिलाओं पर सामाजिक दबाव डाल सकता है, उन्हें एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने या दिखने के लिए मजबूर कर सकता है।

समाज का तकनीकी विकास और महिलाओं की स्थिति के बीच एक जटिल संबंध है। एक तरफ, तकनीकी प्रगति महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा कर सकती है। दूसरी तरफ, यह असमानता को भी बढ़ा सकती है, खासकर यदि महिलाओं को इन तकनीकों तक समान पहुंच न हो या यदि ये तकनीकें पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को मजबूत करती हैं। तकनीकी विकास तक महिलाओं की एक समान पहुंच में असंतुलन की समस्या 21 वीं सदी में भी बदस्तूर जारी है। अमेरिकी समाजशास्त्री आगबर्न ने अपनी पुस्तक 'सोशल चेंज' में कहा है कि समाज के भौतिक संस्कृति एवं अभौतिक संस्कृति में विकास एवं प्रगति की दर एक समान नहीं होता। जब भौतिक संस्कृति अभौतिक संस्कृति की तुलना में तीव्र गति से विकास करते हुए आगे बढ़ जाती है तो इस स्थिति में अभौतिक संस्कृति पीछे रह जाती है एवं यह स्थिति समाज में सांस्कृतिक विलंबना की स्थिति उत्पन्न करती है (Ogburn, 2009)।

आधुनिक युग में औद्योगिक क्रान्ति का वर्चस्व स्थापित होने, पूरी दुनिया में विकास की अंधभक्ति की प्रवृति कायम रहने (दूबे, 2001) तथा वृहद सिद्धांतों की प्रभुता ने समाज के समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियों को उत्पन्न किया है। तार्किकता व विज्ञान की अवधारणात्मकता पर निर्मित व विकसित आधुनिकता की अगली कड़ी में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के विकास ने समाज में उत्तर आधुनिक प्रवृतियों को समावेशित किया है। मैक्रो एवं माइक्रो सिद्धांतों के द्वंद तथा सामूहिकता एवं व्यक्तित्व केन्द्रित सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य ने समाज के हाशिए के लोगों की आवाज को समाज में केन्द्रीय स्थिति के रुप में स्थापित करने हेतु एक मंच प्रदान कर रहा है।

इंटरनेट और डिजिटल साक्षरता महिलाओं को ऑनलाइन शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंचने में मदद कर रहा है,

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

जिससे उनके कौशल और ज्ञान में वृद्धि हो रही है। टेलीमेडिसिन और मोबाइल स्वास्थ्य एप्लिकेशन महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और सेवाओं तक पहुंचने में मदद कर रहे हैं, खासकर ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में। ई–कॉमर्स और ऑनलाइन व्यवसाय महिलाओं को अपने उत्पादों और सेवाओं को बेचने, अपने व्यवसाय का विस्तार करने और वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनने में मदद कर रहे हैं। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म महिलाओं को अपने विचारों को साझा करने, नेटवर्क बनाने और सामाजिक आंदोलनों में शामिल होने में मदद कर रहे हैं। यदि महिलाओं को तकनीकी उपकरणों और इंटरनेट तक पहुंच नहीं है, तो वे तकनीकी प्रगति से लाभान्वित नहीं हो पाएंगी और डिजिटल विभाजन बढ़ सकता है। कुछ तकनीकों का उपयोग महिलाओं के खिलाफ भेदभाव और हिंसा को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा रहा है, जैसे कि ऑनलाइन उत्पीड़न, साइबर बुलिंग, ट्रोलिंग आदि। इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के क्षेत्र में भी पितृसत्तात्मक प्रवृत्ति की प्रभाविकता देखी जा सकती है।

इंटरनेट तक पहुँच होने पर भी, महिलाओं और लड़कियों को अक्सर ऑनलाइन हिंसा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जो अश्लील वीडियो, अश्लील फोटो या अश्लील संदेशों और साइबरस्टॉकिंग के रूप में होता है। यदि तकनीक का उपयोग पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को मजबूत करने के लिए किया जाता है, तो यह महिलाओं को घर और परिवार की देखभाल तक सीमित कर सकता है, जिससे उनकी शिक्षा और रोजगार के अवसर कम हो सकते हैं। सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेमिंग का अत्यधिक उपयोग महिलाओं में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

अभी भी अधिकांश भारतीय नारी आर्थिक दृष्टि से पुरुषों पर आश्रित बनी हुई है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक दृष्टि से भी उसकी प्रस्थिति पुरुषों के समान नहीं है। गृहकार्य में संलग्न नारी एवं आर्थिक उपार्जन करने वाली नारी की प्रस्थिति में परिवर्तन परिलक्षित होता है। पुरुष के द्वारा नारी अधिकारों के हनन के अतिरिक्त नारी के द्वारा नारी अधिकारों के हनन की प्रक्रिया ने भी नारी के उत्थान में बाधा उत्पन्न किया है। वस्तुतः नारी उत्थान की जटिल समस्या केवल सामाजिक विधानों से नहीं दूर की जा सकती (तिवारी, 2014)। तकनीकी विकास महिलाओं के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, लेकिन यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि इसका उपयोग लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए किया जाए। इसके लिए सरकारों, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज को मिलकर काम करना होगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महिलाओं को तकनीकी प्रगति से समान रूप से लाभ हो और वे तकनीकी विकास के नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षित रहें।

सुझाव –

1. महिलाओं को कंम्पयूटर एवं इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकी का लाभ समान रुप से पहुंचाने हेतु भारत सरकार द्वारा अनेक प्रावधान किये गये हैं। इनका जमीनी स्तर पर लागू किये जाने एवं उसके निरंतर समीक्षा की आवश्यकता है।
2. आधुनिकतम तकनीक एवं इंटरनेट व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस युक्त रोबोटिक्स तकनीक के नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षा हेतु विशेष पहल एवं प्रावधान की आवश्यकता है।
3. देश के दूरस्थ क्षेत्रों तक इंटरनेट की कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना।
4. सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों का पर्याप्त प्रचार– प्रसार एवं टारगेट ग्रुप को जागरूक किया जाना।
5. डीपफेक एवं इस प्रकार के अन्य साइबर अवैध गतिविधियों से सुरक्षा हेतु साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना ।
6. इंटरनेट साथी योजना, महिला ई–हाट योजना आदि योजनाओं का व्यापक प्रचार–प्रसार करना।
7. जेंडर सेंसेटाइजेशन के क्षेत्र में व्यापक और गंभीर प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष – समाज के तकनीकी विकास के स्तर ने विभिन्न कालखंडों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया है। मानव समाज के तकनीकी विकास के इतिहास में अद्यतन सर्वाधिक उच्चस्तरीय तकनीकी विकास कंप्यूटर एवं इंटरनेट के आगमन ने महिलाओं के सामाजिक प्रस्थिति में सुधार के अनेकों अवसर को उत्पन्न किया है। एक तरफ जहां तकनीक ने समाज के अन्य हिस्सों की तरह महिलाओं को प्रगति एवं विकास के अवसर उपलब्ध कराये हैं वही दूसरी तरफ अनेक अवसरों पर समाज के भौतिक सांस्कृतिक पक्षों एवं अभौतिक सांस्कृतिक पक्षों के बीच असंतुलित विकास ने सामाजिक रूढ़ियों के साथ प्रौद्योगिकी विकास का मिश्रण कर महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को जटिल और निम्नतर बनाने का कार्य किया है। कंप्यूटर एवं इंटरनेट के विकास ने महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता को एक वैश्विक मुद्दा बनाने का कार्य करते हुए वैश्विक स्तर पर महिलाओं के सामाजिक प्रस्थिति में सुधार एवं उनके सशक्तिकरण के क्षेत्र में अनेक संभावनाओं का सृजन किया है। महिलाओं को भी आधुनिक प्रौद्योगिकी का जिम्मेदारी से उपयोग करने और इसके प्रभावों के बारे में जागरूक एवं दक्ष होने की आवश्यकता है।

महिलाओं और लड़कियों के लिए सिर्फ़ तकनीक और डिजिटल कौशल तक पहुँच होना ही काफ़ी नहीं है। उन्हें सभी के लिए एक सुरक्षित और न्यायसंगत डिजिटल भविष्य बनाने के लिए बदलाव का सक्रिय एजेंट भी बनना होगा। यह जिम्मेदारी सरकारें, सामाजिक संगठन, निजी क्षेत्र, तकनीकी कंपनियाँ और कानून प्रवर्तन सहित समाज के सभी सदस्यों पर है। अधिकार

आधारित शासन और नैतिक सुरक्षा के बिना, डिजिटल प्रभाविकता में महिलाओं और लड़कियों को और पीछे छोड़ने का जोखिम बना रहेगा।

लैंगिक समानता सिर्फ़ एक बुनियादी मानव अधिकार नहीं है। यह विकास की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। जहाँ महिलायें और लड़कियां अपने अधिकारों और आकांक्षाओं को महसूस कर सकती हैं, वहाँ विकास तेज़ होता है और समृद्धि जल्दी आती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Gupta, Namrata (2020), Women in Science and Technology: Confronting Inequalities, Sage Publications, New Delhi.
2. Habib, Irfan (2016), Technology in Medieval India (C. 650-1750), Tulika Books, New Delhi
3. Harshit and Singh, Yashpal (2018), The Role of Technology in the Maryann Empire: From Infrastructure to Economic Systems, International Research Journal of Education and Technology.
4. Jha, D.N (2004), Early India: A Concise History, Manohar, New Delhi.
5. Lechman, Ewa (2021 ed.), Technology and women's empowerment, Taylor & Francis Publisher
6. Saran, Santosh and Singh, Ravindra N. (1994), History of science and technology during Gupta period, Prachi Prakashan, Delhi.
7. William Fielding Ogburn (2009 Reprint), Social Change with Respect to Culture and Original Nature, Kessinger Publishing, Whitefish, Montana (USA).
8. एम. सहगल फाउंडेशन (2023), इस डिजिटल युग में ग्रामीण समुदायों के लिए एक शक्तिशाली माध्यम, एस.एम. सहगल फाउंडेशन की रिपोर्ट, 28 दिसंबर 2023, smsfoundation.org
9. तिवारी, जयकांत (2014), भारत का समाजशास्त्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
10. दूबे, श्यामाचरण (2001), विकास का समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली।
11. वर्मा, लालबहादुर (2006), यूरोप का इतिहास, भाग – 1, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
12. शर्मा, अरविन्द कुमार (2016), महिला सशक्तिकरण में डिजिटल साक्षरता का योगदान, ग्रामीण विकास समीक्षा (महिला सशक्तिकरण विशेषांक), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान, हैदराबाद।
13. सिंह, सुशीला (2023), डीपफ़ेक कैसे बन सकता है लोगों के लिए ख़तरा 22 नवंबर 2023 बीबीसी हिंदी।

*****